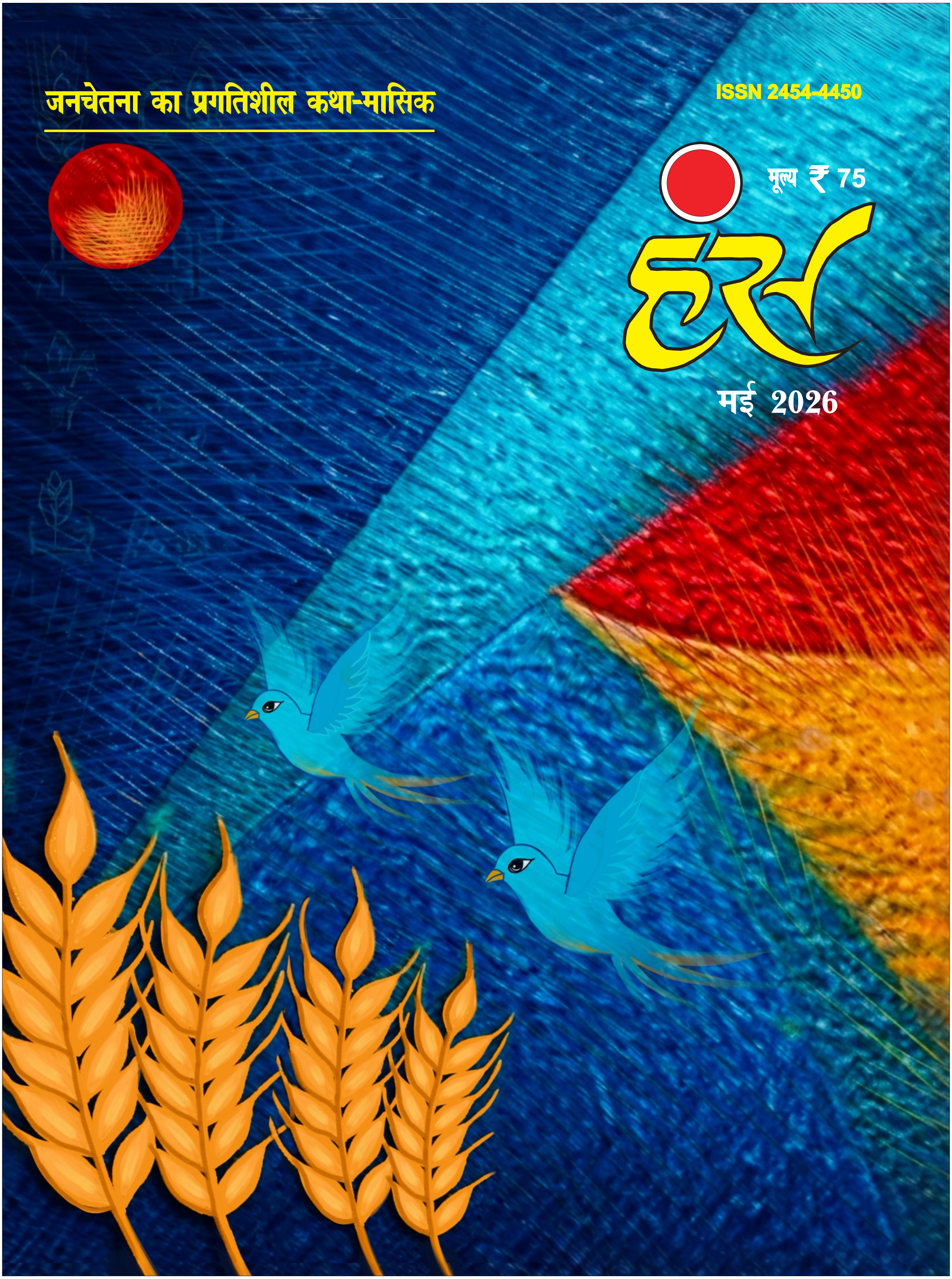

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 75

हंस

मई 2026

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
कार्यकारी संपादक
विवेक मिश्र
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
•
रेखाचित्र
मार्टिन जॉन, राजेन्द्र गायकवाड़, अनुभूति गुप्ता, अशोक अंजुम, आस्था

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 75 रुपए प्रति
वार्षिक रजिस्टर्ड : 1250 रुपए (व्यक्तिगत)
संस्था/पुस्तकालय : 1500 रुपए (संस्थागत)
वार्षिक पीडीएफ : 600 रुपए (व्यक्तिगत)
पीडीएफ : 700 रुपए (संस्थागत)
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-475 वर्ष : 40 अंक : 10 मई 2026

आवरण : पारुल तोमर

हंस

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. अभी दूर है जलसंधि पर संधि : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

न हन्यते
11. जाइए आप कहां जाएंगे : प्रमोद द्विवेदी
13. मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है : नीलांशु रंजन
15. यह चूक आलोचना की है : राकेश कुमार सिंह

मुड़-मुड़ के देख
17. अंधड़ : ओमप्रकाश वाल्मीकि ('हंस', अगस्त 1996)

कहानियां
24. विसर्जन : संजय कुमार सिंह
30. खिड़की से झांकती लड़की : कान्ता रॉय
34. छायानृत्य : राकेश बिहारी
40. नैवेद्य : आयशा आरफ़ीन
48. सफेद हाथी जैसी पहाड़ियां : अर्नेस्ट हेमिंग्वे (अंग्रेजी कहानी) (अनुवाद : उपमा ऋचा)

कविताएं
46. पन्ना त्रिवेदी, बेबी शॉ
47. चारुमित्रा, अभिजीत गोगोई

लेख
51. लोकतंत्र और सर्वसत्तावाद : जीतेन्द्र गुप्ता

उपन्यास अंश-5
65. सोमालिया का यातनाघर : राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय

लघुकथा
69. नाम : सुरेश बरनवाल

ग़ज़ल
76. रहमान मुसव्विर 82. अविनाश भारती

परख
70. क्या 'हिंदू' केवल एक संज्ञा बनकर रह जाएगा? : अपूर्वानंद
74. मन के तानों-बानों का अन्वेषण : इला सिंह
77. टुकड़ों में मिलता रहा हिंदुस्तान : सुधांशु गुप्त
80. सामंती दुरभिसंधियों पर प्रतिघात : किशोरीलाल 'पथिक'
83. निजाम शीर्षक की सार्थकता : ताराराम
85. तश्तरी में परोसा हुआ अलगाव : शकील सिद्दीक़ी

साहित्यनामा
88. साईं से लगन कठिन है भाई : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
94

अभी दूर है जलसंधि पर संधि

इस बार इरादा तो था कि हिंदी साहित्य जगत में हो रही हलचल पर लिखूं, उसके हाल पर नज़र दौड़ाऊं, पर वह तो पहले से ही होर्मुज़ जलडमरूमध्य बना हुआ है. इस छोटी-सी दुनिया में एक दूसरे की मिट्टी पलीद की जा रही है, धावे बोले जा रहे हैं, अपने मुंह मियां मिट्ठू बना जा रहा है. गोया कि रचनाशीलता से किनारा कर बाक़ी हर तरह की उठापटक वहां जारी है. फिर भी इस बात का श्रेय साहित्य के योद्धाओं को तो देना ही होगा कि हिमंत बिस्वा सरमा या रमेश बिधूड़ी की तरह अभी भी उनकी भाषा ने पाताल का गोता नहीं लगाया है, न ही हमारे प्रधान की बोली की तरह वह दलीय और चुनावी चालाकियों से लबरेज़ ही हो पाई है, और ना ही बिहार के नवचयनित मुख्यमंत्री की तरह अशुद्ध और हास्यास्पद! इस बात पर तो निस्संदेह गर्व किया ही जा सकता है, कि कम से कम उन लोगों की अपेक्षा हम संभवतः तनिक अधिक सुसंस्कृत हैं...और हम सांडू-बांडू से ताल मिलाते घोर अशिष्ट शब्दों का प्रयोग अभी तक तो एक दूसरे के लिए नहीं करते.

ख़ैर, बढ़ जाते हैं अभी के टकराव क्षेत्र मध्य पूर्व की तरफ़. ख़बर मिली थी कि ट्रम्प के दबाव में नेतन्याहू ने लेबनान में 10 दिनों के लिए हमले रोक दिए थे कि होर्मुज़ स्ट्रेट को ईरानियों ने खोल दिया था, कि तेल के दाम गिरने लगे थे और दुनिया होश में लौटने लगी थी. ट्रम्प ने ईरान से समझौता हो जाने की स्थिति में पाकिस्तान जाने का वादा भी कर दिया था, जहां वे उस शख़्स के साथ हाथ मिलाते रंगीन तस्वीरें खिंचाने वाले थे, जिसके देश की पांच हज़ार वर्षों की सभ्यता, संस्कृति और इतिहास को वे हमेशा के लिए अंधकार में धकेल देने की धमकियां दे रहे थे. यह बेशक इज़राइल के लिए बिन मलेरिया कुनैन पीने जैसा था. हालांकि, उसे जूड़ी-ताप और सन्निपात की स्थिति में तो ईरानी मिसाइलों ने पहुंचा ही डाला था.

फिलहाल, यह सब होते-होते अचानक रुक गया है. ट्रम्प ने इज़राइली हितों को सर्वोपरि रखते हुए ईरान के नागरिक और फ़ौजी, हर तरह के उपयोग वाले यूरेनियम संवर्धन पर रोक लगाने का एलान कर दिया और सारा माल अपने कब्ज़े में हस्तांतरित कर देने की बिल्कुल नई शर्तें थोप दीं. ईरान के एक मालवाहक जहाज़ को भी उन्होंने अरब सागर में ज़ब्त कर लिया जिसे ईरान ने अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन बताया है और इसे हथियारबंद डकैती की संज्ञा दी है. ज़ाहिर है शांतिवार्ता की बन रही संभावना के दौरान उनकी यह बेजा हरकतें और असंतुलित शर्तें किसी को भी रास नहीं आने वाली थीं. नतीजा है कि सारा मामला एक बार फिर खटाई में पड़ गया है. अपने मध्यावधि चुनावों को ध्यान में रखते हुए ट्रम्प ने अनिश्चितकालीन युद्धविराम की घोषणा बेशक कर दी है किंतु होर्मुज़ स्ट्रेट के मुहाने पर उनकी नाकेबंदी यथावत जारी है. इस ताजा स्थिति पर अनेक कयास लगाए जा सकते हैं. पहला कि ट्रम्प और नेतन्याहू कभी भी यह समझौता करने के लिए गंभीर नहीं थे. और तब यह तथाकथित शांतिवार्ता सीधे तौर पर माफ़िया की तर्ज़ पर बुनी गई एक ख़ौफ़नाक साज़िश सी दिखने लगती है. ईरानी नेताओं को इस वार्ता के बहाने एकत्रित कर उनके खात्मे की साज़िश...! हाल की घटनाओं और इज़राइल-अमेरिका के चरित्र को देखते हुए यह बिल्कुल संभव है. ईरान को हर क़दम पर सावधान रहने की ज़रूरत है. दूसरी संभावना यह कि शांतिवार्ता के बहाने ईरान का ध्यान भटका बड़े पैमाने पर हमला और ग्राउंड इन्वेजन करने के प्रयास जल्द ही देखने को मिल सकते हैं. इस बात को ईरानी संसद के अध्यक्ष के वरिष्ठ सलाहकार मेहदी मोहम्मदी ने ट्रम्प का मजाक उड़ाते हुए कह भी दिया है कि ट्रम्प का यह अनिश्चितकालीन सीज़फ़ायर निश्चित रूप से एक बड़े और औचक हमले की आहट दे रहा है जिसके लिए ईरान तैयार है. अच्छी बात यह है कि बार-बार